तिथि
28.4.2020

Topic SL. No. – 43 (1)

स्नातक द्वितीयवर्ष
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
B.A Hindi
(Hons.)
D II

संक्षिप्त निबंधवत उत्तरवाली प्रश्न

प्र०1) 'कुकुरमुत्ता' के संदर्भ में निराला के प्रगतिवाद पर विचार कीजिए?

उ०1 'कुकुरमुत्ता' निराला की प्रख्यात व्यंग्यात्मक और विचारात्मक काव्यकृति है। यह धनी तथा सर्वहारा वर्ग के परस्पर संबंध के धरातल पर लिखित एक व्यंग्य-प्रबंधात्मक रचना है। मार्क्सवाद का प्रभाव होने के कारण इसे प्रगतिवादी रचना माना गया है। 'कुकुरमुत्ता' में कुकुरमुत्ता सर्वहारा वर्ग का तथा गुलाब धनी वर्ग का प्रतीक है। नवाब के बाग के पास में ही घूरे पर उगा कुकुरमुत्ता अपने पास में खिले गुलाब को बुरी तरह फटकारता है। वह कहता है कि गुलाब (धनी-वर्ग) खाद (सर्वहारा-वर्ग) का रक्त चूसकर विकसित होता है। अतएव, वह शोषकों की श्रेणी में आता है। वह कहता है–

"अबे, सुनबे, गुलाब!
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगो आब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट।"

'कुकुरमुत्ता' की प्रगतिशीलता पर विचार करते हुए श्रीदूधनाथ सिंह ने लिखा है कि 'कुकुरमुत्ता' की बाह्य-संरचना से इस बात का भ्रम उत्पन्न हो सकता है कि वह तथाकथित 'प्रगतिशील' सिद्धांतों से प्रभावित होकर रचा गया काव्य है। लेकिन सिर्फ बाहरी-संरचना में ही ही, क्योंकि उसे गुलाब के प्रतिपक्ष में रखकर देखा गया है। दूसरी ओर नवाब की लड़की और मालिन की लड़की-बहार और गोली को एक-दूसरे के आमने सामने रखा गया है। बाह्य-संरचना की यह परिकल्पना सीधे पूंजीवादी बनाम सर्वहारा के उस वर्ग-सिद्धांत की याद दिलाती है, जो प्रगतिवादी काव्य-सिद्धांत का आधार है, लेकिन इतने से ही 'कुकुरमुत्ता' को इन बने-बनाये साँचों में ढालकर उसके अध्ययन में मुक्त हो जाना एक बहुत बड़ी बेईमानी है। इस तरह का प्रतिपक्ष तो निराला अपनी पहले की कविताओं में भी लिखते रहे हैं।... सिर्फ बाह्य-संरचना या दो विरोधी संस्कारों और स्थितियों की वस्तुओं या आदमियों को आमने-सामने रख देने से ही 'कुकुरमुत्ता' के ऊपर

Scanned with CamScanner

मार्क्सवादी काव्य की नाम-पट्टी चिपका देना अनुचित होगा।

उनके अनुसार 'कुकुरमुत्ता' में जो वर्ग-समाज का ऊपरी और भ्रम में डालने वाला आधार मिलता है, उसके अंदर जाकर देखें तो 'कुकुरमुत्ता' की बुनावट और संरचना का आधार घृणा नहीं है सिर्फ एक व्यंग्य है। 'कुकुरमुत्ता' में कहीं भी क्रांति की गंध नहीं है, बल्कि अपनी परंपरागत महत्ता, मूल्यवत्ता सिद्ध करने में है। तभी तो नवाब द्वारा कुकुरमुत्ते की माँग किए जाने पर माली का यह कहना कि 'कुकुरमुत्ता उगाए नहीं उगता' इस सच्चाई को प्रमाणित करता है कि साधारण या सामान्य को पैदा नहीं किया जा सकता। वह अपने अस्तित्व की सार्थकता और ऊपरी नगण्यता में भी स्वतंत्र है।

इस तरह 'कुकुरमुत्ता' में निरालाजी एक क्रांतिदर्शी या तथाकथित प्रगतिवादी कवि नहीं हैं। एक सत्यद्रष्टा कवि हैं।

– डॉ० आरती प्रसाद
सह प्राचार्य
हिन्दी विभाग
रास नारायण महाविद्यालय
पण्डौल, मधुबनी
मो० नं० 9955839898

Scanned with CamScanner